International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(6): 28-33

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(6): 28-33
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 08-09-2024
Accepted: 13-10-2024

लतिका
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
पंडितदीनदयाल उपाध्याय
शेखावाटी यूनिवर्सिटी,
सीकर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author:
लतिका
शोधार्थी, संस्कृत विभाग,
पंडितदीनदयाल उपाध्याय
शेखावाटी यूनिवर्सिटी,
सीकर, राजस्थान, भारत

किंचित संस्कृत रेडियो रूपकों का समालोचनात्मक संक्षिप्त अध्ययन

लतिका

प्रस्तावना

आधुनिक संस्कृत लेखन में निरन्तर हो रहे नवीन प्रयोग तथा अनवरत साहित्य रचना संस्कृत भाषा के आलोचकों को उत्तर देने में सक्षम है। इस भाषा को मृत कहने वाले व्यक्ति अर्वाचीन काल में संस्कृत के विपुल साहित्य को देखकर आश्चर्यचकित रह जायेंगे। आज संस्कृत में प्रभूत मात्रा में लिखा जा रहा है। जीवन के प्रत्येक पक्ष को विषय बनाकर अनेक विधाओं में सृजन हो रहा है। इन नवीन विधाओं में एक प्रमुख एवं लोकप्रिय विधा रेडियो-रूपक भी है। बीसवीं सदी के मध्य से अब तक न केवल नये रेडियो रूपकों की रचना की गई अपितु पुरानी लोकप्रिय रचनाओं का भी ध्वनि-नाट्य रूपान्तरण किया गया। आकाशवाणी के विभिन्न केन्द्रों से इन रूपकों का प्रसारण भी हुआ है।

आधुनिक संस्कृत नाट्य साहित्य का फलक इतना विस्तृत है कि उस पर नैक विधाओं रूपी चित्रों को उकेरा गया है। 19 वीं सदी के आरम्भ में पारसी थियेटर का प्रभाव, सूचना-क्षेत्र में क्रान्ति, विश्व साहित्य का सम्पर्क आदि कई कारणों के चलते संस्कृत नाट्य साहित्य में कई नवीन विधाओं ने प्रवेश किया, यथा- नुक्कड नाटक, गीतिनाट्य, नृत्यनाटिका, संवादमाला, रेडियो रूपक आदि। अब नाट्य रंगमंच की परिधि में खेले जाने वाला खेल मात्र नहीं रह गया है अपितु यह अपनी सीमाओं को त्यागकर सर्वथा मुक्ताकाश में विचरण कर रहा है।

संचार माध्यमों के क्षेत्र में जब रेडियो का आविष्कार हुआ तो नाट्यकारों को अपने नाट्यों की प्रस्तुति के लिये एक नया मंच मिल गया। इस प्रकार रूपक साहित्य में युगानुरूप रेडियो रूपक नामक विधा का अवतार सम्भव हो पाया।

संस्कृतनाट्यवल्लरी

इस रेडियो नाटक संकलन के रचयिता देवर्षि कलानाथ शास्त्री हैं, जो वर्तमान में जयपुर में निवास करते हैं। प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन हंसा प्रकाशन, जयपुर से हुआ है। इसका नवीनतम संस्करण 2006 में प्रकाशित हुआ।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री आधुनिक संस्कृत में प्रसिद्ध हस्ताक्षर हैं। आप ने काव्य की कई रेडिय विधाओं में रचनाएं लिखी हैं। संस्कृतनाट्यवल्लरी देवर्षि कलानाथ लिखित उन नाटकों का संकलन है, जिन्हें आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित भी किया गया। यही कारण है कि इन नाटकों को स्वयं नाटककार और आलोचकों ने रेडियो नाटक की श्रेणी में रखा है। देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने ग्रन्थ के आरम्भ में राजस्थान में संस्कृत नाट्य विधा पर प्रकाश डालते हुए रेडियो नाटक विधा पर भी विचार व्यक्त किये हैं।

प्रस्तुत ग्रन्थ में देवर्षि कलानाथ शास्त्री द्वारा रचित 8 नाटकों का संकलन किया गया है। ये सारे नाटक रेडियो नाटक के लक्षण पर खरे उतरते हैं। प्रायः सभी नाटकों का प्रसारण जयपुर के आकाशवाणी केन्द्र से हुआ है। समीक्षकों द्वारा इन रेडियो नाटकों की सराहना की गई है। ये 8 नाटक रेडियो नाटकों के समस्त तत्त्वों का निर्वाह करते हुए लोकरंजन के उद्देश्य में भी सफल होते हैं। इन आठ नाटकों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. नाट्यशास्त्रावतार

यह एक संक्षिप्त ध्वनि रूपक है, जिसे 30 मिनट से भी कम समय में अभिनीत किया जा सकता है। इस प्रकार यह आकाशवाणी केन्द्र से प्रसारण के लिये सर्वथा उपयुक्त है। इस नाटक की कथावस्तु भरत मुनि कृत नाट्यशास्त्र के प्रथम अध्याय की उस कथावस्तु पर आधारित है, जिसमें यह बतलाया गया है कि किस प्रकार देवताओं की प्रार्थना पर ब्रह्मा ने नाट्यशास्त्र नामक पंचमवेद की रचना की और महर्षि भरत सर्वप्रथम नाट्यशास्त्रकार बने। इसमें जर्जर, इन्द्रविजय नामक नाटक का प्रयोग, नाट्यशाला निर्माण आदि का भी वर्णन किया गया है। स्थान स्थान पर नाटक में ध्वनिसंकेतों को भी दिया गया है, यथा- कोलाहलो वर्धते, चीत्कार-ध्वन्यः, कोलाहलः शाम्यति, संगीत-नृत्यादि प्रचलति।

2. महाभिनिष्क्रमण

इस नाटक की कथावस्तु सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) के राजगृह से निर्गमन पर आधारित है। यह नाटक प्रायः आधे घंटे में अभिनीत किया जा सकता है। मानव जीवन की क्षणभंगुरता, जराः ण के दुःख आदि को मार्मिक ढंग से इस नाटक में प्रस्तुत किया गया है।

3. प्रणयसन्देश

इस रेडियो नाटक की नायिका रुक्मिणी एक पौराणिक पात्र है। श्रीमद्भागवत में वर्णित रूक्मिणी की कथा को आधार बनाकर इस नाटक का ताना-बाना बुना गया है। इस पौराणिक कथावस्तु को आधुनिक श्रोताओं के लिये और अधिक रसनीय बनाने हेतु कृष्ण व रूक्मिणी के पूर्वराग को मानवीय प्ररिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है। नाटक की भाषा शैली पात्रों की भावनाओं को अभिव्यक्त करने में पूर्ण रूप से सक्षम है। श्रोताओं की सुविधा के लिये सूत्रधार दृश्यों के मध्य आकर कथावस्तु का परिचय देता चलता है, जिससे श्रोताओं को सुनकर के घटनाक्रम का संकेत होता रहता है।

4. पृथ्वीराजविजय

यह ध्वनिनाटक ऐतिहासिक घटनाक्रम पर आधारित है। इसे अजमेर के स्वर्णिम इतिहास के आधार पर रचा गया है। इसमें नायक महाराज पृथ्वीराज व नायिका संयोगिता है। पृथ्वीराज का संयोगिता से स्वयंवर में हुए विवाह का सम्पूर्ण घटनाचक्र यहां वर्णित किया गया है। रूपक में ऐतिहासिक तथ्यों का पूर्ण ध्यान रखा गया है। राजसभा व पात्रों के अनुरूप ही भाषा का चयन किया गया है, जिससे कि रूपक में समुचित वातावरण की सृष्टि होती है। सूत्रधार की उक्तियां इस रेडियो रूपक को जीवन्त बना देती हैं।

5. प्रतापसिंहीयम्

यह ध्वनिनाटक महाराणा प्रताप के जीवन पर आधारित है। इसमें मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये महाराणा प्रताप द्वारा किये गये संघर्ष को चित्रित किया गया है। नाटक में प्रामाणिक ऐतिहासिक तथ्यों को आधार बनाया गया है। युद्ध के दृश्यों में दिये गये ध्वनिसंकेत नाटक को प्रभावशाली बना देते हैं, यथा- युद्धसूचका ध्वन्यः, अश्वानां हेषारवाः, आवेगजनकवाद्यध्वनयः उत्तिष्ठन्ति, शनैः शनैर्विलीयन्ते च । महाराणाप्रतापस्य सदसि मन्त्रणस्य वार्तालापाः श्रूयन्ते।

6. धर्मस्य तत्त्वं निहितं गुहायाम्

यह एक काल्पनिक कथावस्तु पर आधारित नाटक है। इसे हम सामाजिक रेडियो रूपक कह सकते हैं क्योंकि इसमें समाज में व्याप्त रूढियों, धर्म की संकीर्णताओं पर करारा व्यंग्य किया गया है। धर्मानन्द नामक एक

पाखण्डी कथावाचक एवं सत्यनिष्ठ अध्यापक सत्यव्रत के ईर्द-गिर्द नाटक का सारा घटनाचक घूमता है। सत्याचरण करते हुए कर्मक्षेत्र में प्रवृत्त रहना ही सबसे बडा धर्म है, यही इस नाटक का मूल संदेश है।

7. कविताया मूल्यम्

उक्त रेडियो नाटक किरातार्जुनीयम् नामक महाकाव्य के रचयिता महाकवि भारवि के जीवन की एक किंवदन्ती से सम्बन्धित है जो कि उनकी आर्थिक स्थिति से भी जुडा हुआ है। सहसा न विदधीत न कियाम्... यह पद्य भी इसी घटना से सम्बद्ध है। यह नाअक काव्य की शक्ति को तो चित्रित करता ही है, साथ ही महाकवि भारवि की उत्तम प्रतिभा को भी उजागर करता है।

8. प्रियदर्शिका

हर्षवर्धन के नाम से हमें संस्कृत में नागानन्द, प्रियदर्शिका एवं रत्नावली नामक नाट्यग्रन्थ प्राप्त होते हैं। कवि देवर्षि कलानाथ शास्त्री ने प्रियदर्शिका नामक नाटिका के कथानक को ही उक्त रेडियो रूपक में संक्षिप्त करके रूपान्तरित किया है।

नवमालती

इस संकलन के लेखक डॉ. नोदनाथ मिश्र है। रेडियो नाटक विधा में लिखी गई इस रचना के नाग प्रकाशन, जवाहर नगर, दिल्ली हैं। इसका प्रथम संस्करण 1997 में प्रकाशित हुआ है।

अर्वाचीन संस्कृत साहित्यकार पं. नोदनाथ मिश्र रचित लगभग 20 संस्कृत रूपकों का प्रसारण आकाशवाणी के पटना, लखनऊ, वाराणसी, दरभंगा केन्द्रों से हुआ है। पं. नोदनाथ मिश्र का जन्म बिहार के जिलला मधुबनी, ग्राम लालगंज में सन् 1944 को हुआ। लम्बे शिक्षण अनुभव से इन्हें संस्कृत भाषा को रोचक ढंग से सीखाने तथा लोकप्रिय बनाने के उपाय खोजने की प्रेरणा मिली। इसी प्रयास में आपने संस्कृत रेडियो रूपकों की रचना की। इनके रचित रूपकों में से नौ रेडियो रूपकों का संकलन नवमालती शीर्षक से पुस्तकाकार में प्रकाशित हुआ। इन रूपकों की कथावस्तु वर्तमान समाज एवं जन सामान्य से सम्बन्धित है। सभी रूपकों की कथावस्तु कवि कल्पित है। समाज में व्याप्त विभिन्न बुराईयों तथा समस्याओं को लेकर लेखक चिन्तित है, यही चिन्ता इन रूपकों में उभर कर सामने आई है। प्रत्येक रूपक अलग मन्तव्य लेकर चलता है तथापि लेखक सबसे अधिक आहत दहेज नामक सामाजिक बुराई से प्रतीत होते हैं। ऐसा नहीं है कि लेखक ने केवल समस्याओं को ही प्रस्तुत किया है, लेखक ने इन रूपकों में सामाजिक समस्याओं के समाधान का सौरभ मालती कुसुम की तरह विकीर्ण किया गया है, यही इस रचना के नामकरण का आधार भी है। दहेज के अतिरिक्त युवा-असन्तोष, शिक्षित बेरोजगारी, भ्रष्टाचार, स्त्री-पुरुष असमानता, पुत्र प्राप्ति की अदम्य इच्छा मे कन्या राशि जुटाते जाना आदि सामाजिक विडमबनाओं को कथानक में मुख्य रूप से उकेरा गया है। समस्याओं को प्रस्तुत करते हुए भी कवि अपनी प्रतिभा से कथानक के प्रति श्रोता/पाठक की रुचि बनाये रखने में सफल होते हैं।

- एतत्तु शोभनं यदावयोः सम्पत्तिः पूर्वमेव वण्टिताऽस्ति
- यावत् श्वासाः तावत् आशाः
- हस्तिनः दन्ताः इव भक्षणस्य अन्यत् प्रदर्शनस्य च अन्यत्
- जामाता तु लक्षेषु एक एव मिलितः
- आः त्यज इमाः कथाः

यहां हिन्दी के शब्दों का संस्कृतीकरण भी किया गया है, यथा- उद्घारम् (उधार), त्रुटितः जातः (टूट गया हूं)। संस्कृत में नवीन शब्द भी प्रयुक्त किये गये हैं, यथा- प्रातिकृतिकः (फोटोग्राफर)।

व सरलता रेडियो-रूपकों में संवादों लघुकलेवर कथा-प्रवाह को बनाये रखने में सहयोग देते हैं तथा नाटकीय प्रभाव में वृद्धि करते हैं। ये रूपक अभिनय की दृष्टि से भी सफल हैं। स्पष्ट रूप से दिये गये ध्वनि-निर्देशों के कारण ये प्रसारणीय तो हैं ही, इन्हें नुक्क्डनाटक या रंगमंचीय नाटकों के समान भी प्रयुक्त किया जा सकता है। लेखक ने इन्हें लघुसंस्कृतनाटिका भी कहा है।

पूर्वशाकुन्तलम्

इस रेडियो नाटक संकलन के लेखक डॉ. हरिराम आचार्य इस संकलन के प्रकाशक हंसा प्रकाशन, जयपुर है। इसका प्रथम संस्करण 2002 में प्रकाशित हुआ। डॉ. हरिराम आचार्य जयपुर में निवास करते थे। आप संस्कृत, हिंदी, प्राकृत, उर्दू, राजस्थानी आदि भाषाओं के जानकार थे। गौरतलब है कि डॉ. हरिराम आचार्य ने फिल्मों के लिए भी गीत लिखे गम-ए-दिल किस से कहूं, कोई भी

गमख्वार नहीं, जो मुकेश ने गाया था, उसे सुनकर आलोचकों को हैरानी हुई। आपने मूल न जाना (1971), मेहंदी रंग लाएगी (1981), बवंडर (2000) फिल्मों के लिए हिन्दी और उर्दू में गीत लिखे।

आपके द्वारा रचित अनेक संस्कृत काव्यों में मधुच्छन्दा, नचिकेतकाव्यम्, पूर्वशाकुन्तलम् प्रसिद्ध रहे हैं। पूर्वशाकुन्तलम् सात एकांकियों का संकलन है, जो अपनी शैली के कारण रेडियो रूपक हैं। ये सब रेडियो रूपक मौलिक हैं, रूपान्तरित नहीं। नाट्यकार ने ये रूपक आकाशवाणी केन्द्र जयपुर से प्रसारण के लिये लिखे थे, बाद में इनका संकलन कर पुस्तकाकार रूप में प्रकाशित करवाया गया। डॉ. हरिराम आचार्य ने ध्वनि-रूपक विधा के आविष्कार और उसके लक्षणों पर भी विचार किया है। इन सात रेडियो रूपकों का संक्षिप्त परिचय इस प्रकार है-

1. पूर्वशाकुन्तलम्

यह महाभारत के शकुन्तला उपाख्यान पर आधारित है। कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् के प्रथम अंक में अनसूया दुष्यन्त संवाद के द्वारा शकुन्तला के जन्म का वृतान्त ज्ञात होता है, अतः इसका नामकरण पूर्वशाकुन्तलम् किया गया है।

कुशिकवंशी राजर्षि विश्वामित्र और अप्सरा मेनका वृतान्त और शकुन्तला की उत्पत्ति और कण्व को शकुन्तला की प्राप्ति तक का कथानक इसमें वर्णित है। यहां मेनका का वात्सल्य प्रकट होता है-

> मेनका- मा रोदीः वत्से (सपुच्चकारम्) अलं अलं क्रन्देन। त्वं मे हृदयम्, त्वं मे प्राणाः, त्वं में उत्संग-रत्नम्, त्वं सौभाग्यमणिः, त्वां प्रसूय अयं मम अपराधोऽपि पुण्यरूपेण परिणतः। वत्से। पुत्रिके। (वत्सा पुनः रोदिति) अले-ले-ले-पश्य, अयं मयूरः, अयं शुकः, इयं सारिका, अयं चित्रमृगः।

2. गंगालहरी

पण्डितराज जगन्नाथ एवं लवंगी से सम्बद्ध कथा को आधार बनाकर यह रूपक रचा गया है। दाराशुकोह के गुरु एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् पं. जगन्नाथ यवनी कन्या लवंगी के प्रेम में आसक्त होकर उससे विवाह करते हैं तो वे काशी के अप्पय दीक्षित प्रभृति विद्वानों के कोप के भाजन बनते हैं। पं. जगन्नाथ पर यवनी-संसर्ग-दूषित का आक्षेप लगाया जाता है। लवंगी के द्वारा आत्महत्या करना, पं. जगन्नाथ द्वारा गंगाजल में विसर्जन के लिये लवंगी के शरीर को ले जाना, धार्मिकों द्वारा रोकना, 52 सीढियों के ऊपर बैठकर गंगालहरी की रचना करना आदि वर्णित है। दाराशुकोह और पं. जगन्नाथ के वार्तालाप में नाट्यकार कहते हैं-

दाराशिकोह - यवनभाषासंसर्गेण दूषिताः मा भवेयुरिमे पवित्रा मन्त्राः।

3. न हि भोजसमो नृपः

धारा नगरी के राजा का चरित न जाने कितनी किंवदन्तियों से भरा पडा है। राजा, कवि, पण्डितों के आश्रयदाता, सहृदय मित्र न जाने कितने रूपों में भोज हमारे सामने आते हैं। बल्लालसेन ने तो भोजप्रबन्ध ग्रन्थ में महाकवि कालिदास को भी उनकी सभा का रत्न बताया है। एक किंवदन्ती के अनुसार किसी बात के कारण कालिदास भोज के राज्य से निर्वासित होते हैं। फिर भिक्षुवेश वाले राजा भोज से कालिदास सुनते हैं कि भोज दिवंगत हो गये तो पुनः किस प्रकार उनका मिलन होता है, यह इसमें वर्णित किया गया है-

> अद्य धारा निराधारा निरालम्बा सरस्वती ।
> पण्डिताः खण्डिताः सर्वे भोजराजे दिवंगते ।।

वेश्या विलासवती व कालिदास के वार्तालाप के व्याज से नाट्यकार वेश्याओं के विषय में समाज को उद्घाटित करते हैं-

> विलासवती नैव नाथ! केवलम् एका क्षुद्रा गणिका अस्मि, रूप - यौवन-विक्रेत्री पण्यस्त्री....
> कालिदास-विलासवति! पाप-पंकिला दोषदूषिता हि तेषां दृष्टिः, ये खलु अपूर्वसौंदर्यविभूषितायाम् अपि त्वयि केवलं वारांगनां पश्यन्ति।

4 आषाढस्य प्रथम-दिवसे

पद्मपुराण में वर्णित हेममाली यक्ष व विशालाक्षी यक्षिणी की कथा तथा कालिदास रचित मेघदूत को आधार बनाकर इस रूपक की रचना की गई है। यहां यक्ष की दशा जानकर कुबेर उसे क्षमा कर देते हैं. पुष्पकविमान से यक्ष अलकापुरी आता है और यक्षिण से उसका पुनर्मिलन हो जाता है।

5. सत्यमेव जयते

रामायण के युद्धकाण्ड की कथा व रावणवध को इस रूपक में विशेषरूप से निबद्ध किया गया है।

6. वेताल-कथा

सोमदेव रचित कथासरित्सागर में वेतालकथा पद्यबद्ध दी गई है। उनमें 25 वीं कथा को आधार बनाकर यह रूपक रचा गया है।

7. नेत्रदानम्

इस एकांकी में शुभा नामक बौद्धभिक्षुणी की कथा वर्णित है, जिसके सौन्दर्य से आकर्षित होकर ब्रह्मपुर नरेश काममोहित हो जाता है। वह उसके सुन्दरनेत्रों की प्रशंसा करता है। उसकी सौन्दर्यपिपासा को शान्त करने के लिये शुभा अपने नेत्र निकालकर उसे दे देती है और मृत्यु को प्राप्त हो जाती है। उपगुप्त नामक भिक्षु पश्चात्ताप की अग्नि में जल रहे राजा को सान्त्वना देकर तथागत की शरण में जाने के लिये प्रेरित करता है।

किस प्रकार के सामाजिक नाटक संस्कृत में लिखने चाहिए, यह नाटक इस का उत्तम निदर्शन है।

प्राचीन नाट्य रूप की सार्थकता रंगमंच पर चतुर्विध अभिनय द्वारा उसके अभिनीत होने में ही मानी जाती थी किन्तु समयाभाव वाले आधुनिक युग में रंगमंच के लिये दर्शकों की अनुपलब्धता एक गम्भीर समस्या है। फिल्म, टेलिविजन, रेडियो, मोबाइल के युग में दर्शकों की दूरी रंगमंच से बढ़ गई है। ऐसी परिस्थिति में संस्कृत नाट्यकारों को रेडियो के रूप में अपने नाट्यों की प्रस्तुति के लिये एक नवीन मंच उपलब्ध हो गया। रेडियो पर प्रसारित होने वाले नाटकों को रेडियो नाटक/रेडियो रूपक/ध्वनि नाटक/ध्वनिनाट्य आदि नामों से अभिहित किया जाता है। आधुनिक संस्कृत में अन्य भी रेडियो रूपक लिखे व विभिन्न आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित हुए हैं।

संदर्भ सूची

1. गंगालहरी, हरिराम आचार्य पूर्वशाकुन्तलम् में संकलित, हंसा प्रकाशन, जयपुर, 2000 आकाशवाणी केन्द्र, जयपुर
2. गणयछागः, कमलारत्नम दिव्यज्योति पत्रिका, जुलाई, 1976
3. चक्रव्यूहभंगम्, रमाकान्त शुक्ल अर्वाचीन संस्कृत पत्रिका, दिल्ली, 1970 आकाशवाणी केन्द्र, दिल्ली
4. चाण्डालिका, वनेश्वर पाठक ज्योति प्रकाशन, आकाशवाणी रांची
5. दाराशिकोहीयम्, रमाकान्त शुक्ल, अर्वाचीन संस्कृत पत्रिका, दिल्ली, (अंक-11/4) 1989 आकाशवाणी केन्द्र, दिल्ली
6. द्राक्षामतः शकुन्तला, वेद कुमारी घई, पुरन्ध्रीपंचकम् में संकलित, रा.संस्कृत संस्थान, दिल्ली, 1998, रेडियो जम्मू काश्मीर
7. नचिकेतोयमसंवादम्, कमलारत्नम् आकाशवाणी, दिल्ली
8. नियतिचक्रम्, रमाकान्त शुक्ल, अर्वाचीन संस्कृत पत्रिका, दिल्ली, 1976 आकाशवाणी केन्द्र, दिल्ली
9. पण्डितराजीयम्, रमाकान्त शुक्ल
10. अर्वाचीन संस्कृत पत्रिका, दिल्ली, (अंक-6/3) 1984 आकाशवाणी केन्द्र, दिल्ली
11. पुरश्चरणकमलम, रमाकान्त शुक्ल अर्वाचीन संस्कृत, आकाशवाणी केन्द्र, पत्रिका, दिल्ली, (अंक-6/3) 1984, दिल्ली
12. पूर्वशाकुन्तलम्, हरिराम आचार्य पूर्वशाकुन्तलम् में संकलित, हंसा प्रकाशन, जयपुर, 2000 आकाशवाणी केन्द्र, जयपुर
13. मदालसा, वेद कुमारी घई, पुरन्ध्रीपंचकम् में संकलित, रा. संस्कृत संस्थान, दिल्ली, 1998 रेडियो जम्मू काश्मीर
14. मेनकावात्सलयम्, वेद कुमारी घई, पुरन्ध्रीपंचकम् में संकलित, रा. संस्कृत संस्थान, दिल्ली, 1998 रेडियो जम्मू काश्मीर
15. रक्तदानम्, वनेश्वर पाठक, परमार्थसुधा पत्रिका आकाशवाणी रांची
16. रक्षाबन्धनम्, वनेश्वर पाठक, ज्योति प्रकाशन आकाशवाणी रांची
17. विक्रमोर्वशीयम्, रमाकान्त शुक्ल अर्वाचीन संस्कृत पत्रिका, दिल्ली, (अंक-11/3) 1989 आकाशवाणी केन्द्र, दिल्ली
18. विक्रान्तकर्णम्, वनेश्वर पाठक अमर प्रिंटर्स, रांची, आकाशवाणी रांची
19. विभ्रान्तनारदम्, वनेश्वर पाठक, ज्योति प्रकाशन आकाशवाणी रांची

20. विवेकानन्दविजयम्, कमलारत्नम् आकाशवाणी, दिल्ली
21. विवेकानन्दस्मृतिः, कमलारत्नम्, संविद् पत्रिका, नवम्बर, 1984
22. अभिशापम्, रमाकान्त शुक्ल अर्वाचीन संस्कृत पत्रिका, दिल्ली, (अंक-6/3) 1984 आकाशवाणी केन्द्र, दिल्ली
23. आलोकिनी, रमाकान्त शुक्ल अर्वाचीन संस्कृत पत्रिका, दिल्ली, (अंक-11/3) 1989 आकाशवाणी केन्द्र, दिल्ली
24. अपूर्वः प्रतिशोधः, वेद कुमारी घई पुरन्ध्रीपंचकम् में संकलित, रा.संस्कृत संस्थान, दिल्ली, 1998 रेडियो जम्मू काश्मीर
25. आषाढस्य प्रथमदिवसे,हरिराम आचार्य,पूर्वशाकुन्तलम् में संकलित, हंसा प्रकाशन, जयपुर, 2000 आकाशवाणी केन्द्र, जयपुर
26. अजेयभारतम् शिवप्रसाद भारद्वाज, सूर्योदय पत्रिका. वाराणसी, 1963 ज्योति प्रकाशन
27. कादम्बरीनाटिका, वनेश्वर पाठक, आकाशवाणी रांची